चित्र: कनक किरण, पाँचवीं, टोंक, राजस्थान

## एक शैतान बच्चा

एक लड़का था। उसका नाम था राहुल। वह कक्षा 2 में पढ़ता था। राहुल सबको मारता था। एक दिन उसने एक लड़के को ज़ोर से मारा। सभी बच्चे बहुत परेशान थे। एक दिन टीचर ने कहा, "बच्चों मैं यह जानती हूँ कि तुम्हें कौन परेशान करता है। और उसका नाम राहुल है।" एक लड़की ने कहा, "टीचर आप इससे कहें कि यह बाहर जाए और सो जाए।" टीचर ने यही करा जो उस लड़की ने कहा था। सभी बच्चे खुश थे।

*– पाखी जोशी, दूसरी, दिल्ली*

# मेरा पन्ना

# बंगाल का खास स्वाद – नोलेन गुड़

बंगाल की ठण्ड बड़ी सुहावनी होती है। हम सर्दियों को बड़े ही उत्साह के साथ मनाते हैं। हमारे यहाँ सर्दियों का खास तोहफा नोलेन गुड़ होता है।

खजूर का रस इकट्ठा करने के लिए गाँवों में खजूर के पेड़ों पर खास तरह से कट लगाए जाते हैं। रातभर पेड़ से बँधे मटकों में बूँद-बूँद करके रस इकट्ठा होता रहता है। फिर इन्हें एकदम सुबह-सुबह इकट्ठा करके ले जाते हैं।

फिर इस रस को बड़े-बड़े बरतनों में आग पर रखकर उबालते हैं। जैसे ही यह गाढ़ा होने लगता है सुनहरा-भूरा नोलेन गुड़ बनने लगता है। ज़्यादा उबालने पर यह शीरे में बदल जाता है। इसमें कुछ केमिकल (रसायन) भी मिलाते हैं। फिर यह जम जाता है और इसे बाद में इस्तेमाल के लिए रख सकते हैं। फिर इसे बाज़ार में बेचते हैं।

हर किसी को रोटी और पूरी के साथ नोलेन गुड़ बहुत ही अच्छा लगता है। बहुत सारी मिठाइयाँ बनाने के लिए भी मीठे के तौर पर गुड़ का इस्तेमाल होता है। मेरी दादी शीरे से पीठे और पाया बनाती हैं। नाश्ते में व सुबह-शाम खाने के बाद इसे खाना मुझे बहुत अच्छा लगता है। जब यह मेरे मुँह में होता है तो जो स्वाद आता है उसे मैं शब्दों में नहीं बता सकता। बहुत ही स्वादिष्ट! सर्दियों में इन मिठाइयों का स्वाद लेने के लिए आप लोग भी यहाँ आएँ।

नोलेन गुड़ बनाने के इस छोटे-से उद्योग से राज्य के लिए खासी कमाई हो जाती है। इसकी मिठास व स्वाद पूरे देश में भी फैले।

*– कथा व चित्रः मेघदीप साहा, चौथी, कोलकाता, प. बंगाल*

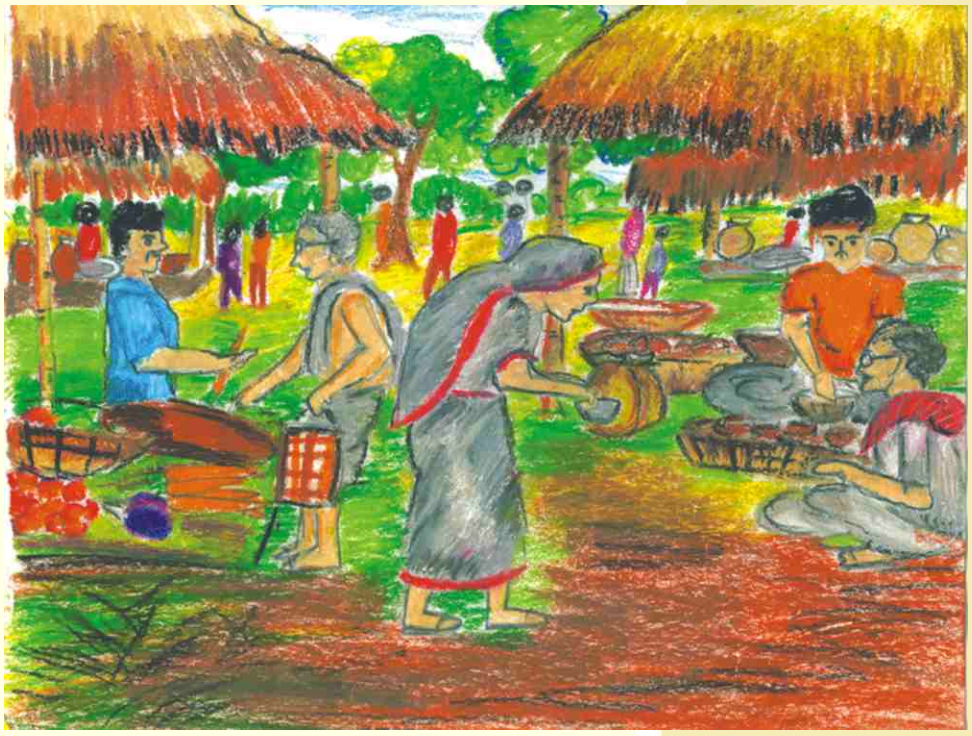

## मेरा पन्ना

# मेरी छुट्टियाँ

यह है हमारा गजरौला का घर – पुष्कर वाटिका। हमारे घर में हमारे जैकी, विनी, लक्ष्मी और लाली भी रहते हैं। भौं भौं जैकी और विनी हमारे डॉगी हैं और लक्ष्मी और लाली हमारी गाय और बछिया हैं। मैंने अपनी गर्मी की छुट्टियाँ यहीं बिताईं।

हमारे परिवार में खूब सारे लोग हैं। इस तस्वीर में सबसे पहले मेरे ताऊजी हैं। उनके बाद छोटी ताईजी, मेरी मनु दीदी, विभु भइया, बड़ी ताईजी, मैं खुद, वुफक्की भइया और आशु भइया हैं। हमारा घर बहुत ही सुन्दर बगीचे में है। वहाँ मैं सुबह जल्दी उठा करती थी। और बगीचे में घूमने जाया करती थी। वहाँ तरह-तरह की चिड़िया हैं और बन्दर भी। इस बार बाग में गिलहरी ने अपना घर बनाया है और बाज़ ने अपना घोंसला। हमारे बाग में आम के पेड़ हैं। पके आमों को पेड़ पर लटके देखना बड़ा अच्छा लगता है।

मेरे ताऊजी ने पानी का एक टैंक बनवाया है। हम सब बच्चे गर्मी के दिनों में हमेशा पानी के टैंक में खेलते रहते हैं। होली में रंग खेलने के बाद भी हम इसी टैंक में नहा कर अपना रंग छुड़ाते हैं। मुझे तो टैंक में बहुत मज़ा आता है। इस टैंक में दो तल हैं – ऊपर का तल बच्चों के लिए है और नीचे का तल बड़ों के लिए। मुझे उसमें नहाना बहुत अच्छा लगता है। मैं इस तस्वीर में अपने विभु भइया के साथ नहा रही हूँ। मेरे ताऊजी को ठण्डी चीज़ें बहुत पसन्द हैं। हमारे यहाँ रोज़ जौं के सत्तू का ठण्डा-ठण्डा शरबत बनता था। दोपहर को रोज़ ताऊजी मौसम्बी का खूब सारा जूस निकालते थे। मौसम्बी छीलने में हम बच्चे भी उनकी मदद करते थे। ताऊजी उसमें इतना सारा बर्फ डालते थे कि जूस पीने में मज़ा ही आ जाता था। फिर हम एक नहीं दो गिलास जूस पी जाते थे। इस फोटो में हम सब साथ बैठकर जूस पी रहे हैं। इसके अलावा वहाँ हमने अपने पेड़ के मीठे-मीठे आम भी खूब खाए। तभी तो मेरे बहुत सारी फुंसियाँ निकल आईं।

*– रम्या, पाँच वर्ष, दिल्ली*